७. कवि श्री प्रथमेश

कवि श्री प्रथमेश

सहज भक्ति का अभिराम स्वरूप

मुझे खुशी होगी मौत को गले लगाकर
जानता हूँ स्नेह का यह परिणाम है ।
हो क्यों अफसोस तुम्हें, सत्य मार्ग पर चलके,
मेरा प्रतिदान मेरी साधना का धाम है ।
चाहूँ प्रतिदान मैं पवित्र प्रेम का कैसे,
आराधना मेरी, केवल निष्काम है
प्यार बेचता नहीं और बिकता भी नहीं
यह तो सहज भक्ति का रूप अभिराम है ।

बन कर सच्चे वैष्णव आओ

बनकर सच्चे वैष्णव आओ
प्रभु चरणों का ध्यान लगाओ
भक्ति भाव से निर्मल मन से
अपनेपन का भाव बनाओ
हो चरित्र भी उज्वल अपना
सबको सेवामार्ग बताओ
करो तिमिर को दूर सब मिल
वैश्वानर की ज्योति जगाओ
शंकित से क्यों फिरते जग में
अहो वैष्णवो सब मिल जाओ
दूर करो सब शंकाओं को
प्रभु के सम्मुख हिल मिल जाओ
दूरी दूर करो समाज की
हरि को मिल सहगान सुनाओ
परिषद् का प्यारा ध्वज अपना
इसकी छाया में रहकर
सपनों को साकार बनाओ

'अनोखी सुमनांजलि'

खूब खेलो खून की तुम होलियाँ
धर्म से, जिसे श्री वल्लभ ने अपने
आत्मीय निस्साधन जनों के हेतु
प्रकट किया था ।
स्नेह का सिंचन दिया और
दिया स्नेह का दान,
किन्तु तुम ने क्या दिया ?
घिनौना प्रतिदान !
सब कुछ सहकर भी उस पवित्र
महाभूति ने
पग-पग पर दिखाया, स्नेह का सोपान
फिर भी नहीं छोड़ा तुमने मिथ्या
अभिमान !
तुम्हारी रंग रेलियाँ और मदभरी
मस्ती ने -
सभी कुछ तो रंग दिया है
शोणित के रंग से
क्या कुछ नहीं किया है तुमने
धर्म संघ से ।
परिषद् के पंखों को
नोचा और खरोंचा है,
स्वार्थ की लाली के हाला के जोश में
फिर नहीं आये स्वयं भी होश में ।
अनुराग का रंग बदरंग कर वीभत्स,
घूमते हो आलम में होकर अलमस्त
आह ! निस्साधन का
साधन भी छीना,
और अब उसका ईमान भी छीनकर
उसके सर्वस्व की होली जलाई है,

३

सजाई है तुमने अपनी मधुशाला
वैश्वानर का तेज-पुंज
फिर भी न होगा धूमिल
ज्वाला की धधकती ये आहें,
निरसाधन की एकमात्र साधना,
सभी जब अपने स्वरूप को समझेंगे,
दावानल दहकेगा,
ज्वलंत सत्य साधना का ।
अकिंचनों की आराधना भी
अपना रंग लायेगी ।
महल की मीनार और यह परिखा
पतझड़ के पत्तों सी
फौरन गिर जायेगी ।
प्रेम के प्रवाह का ज्वार जब उमड़ेगा,
दम्भ के पर्वत, शिलाएँ ढह जाएंगी
आज तुम कर लो,
अट्टहास निज धर्म पर
कल काल की कराल घटा
का गर्जन
तर्जन करेगा तुम्हें ।
तड़त, ढाक, तड़त ढाक
कौंधेंगी विजलियाँ,
पैसे पाखंड की यवनिका जल जायेगी
सुबह और शाम का आसमान होगा
लहूलुहान देख सकोगे क्या कभी,
दृढ़ता से, साहस से नियति की क्रूरता ।
आज मुस्करा कर विवशता पर,
तुम भी करलो मन की ।
फिर यह सच है कि-
पापी पाखण्ड की भस्मी वन जाएगी
आह ! उन भक्तों की, सहज अनुरक्तों की

कलिमल की कालिमा,

तुम्हारे मुख पर गल जायेगी

आहा - हा - हा - हा

खेलो तुम धर्म के, रग-रग के रक्त से

फिर निज प्रिय जन में,

दिव्य ज्योति जल जायेगी,

हस्ती न मिट सकेगी,

तुमसे कभी अमर अनुराग की ।

क्या हुआ अगर, खूनी होली खिल जाएगी

यह तो होगा हमारा परम सौभाग्य,

सदा सर्वदा के लिये

यही सुमन-अंजलि हमारी बन जाएगी

★ ★ ★

दान करो, दान करो

दान करो, दान करो, भावना का दान करो,

हे महान् वैश्वानर, भावना का दान करो ।

प्रवल तब प्रताप से, मिल के सभी सेवा करें,

निज सुख का भाव त्यागें, ऐसे हम महान करो ।।

भ्रमित हुए आज हम, अपने में केन्द्रित हो,

सतत कार्य करने की, शक्ति प्रदान करो ।

भक्ति भाव स्नेह की,सरिता वहती रहे,

शिथिल हों न सेवा में कभी ऐसे देह प्राण करो ।

दान करो दान करो ।

★ ★ ★

दीनता न आई मन

किया सत्संग नाहि, नाम संतसंग धर्यो
मंडल में कमण्डल की काहू को न सुध है ।
करैं सदा पीछे तैं मिथ्या व्योहार अहो,
भ्रमित चित्त ऐसे, भरमते बुध है ।।
दीनता न आई मन, हीनता अधिक बाढी
ढपली बजावै सदा, फूटे ढौल धुद हैं ।।
बूढ्यो नाम वैष्णव को, इनकी करतूतन तैं
माने वाहि धरम जहाँ आपुन ही खुद हैं ।।

★ ★ ★

धर्म की करो प्रबुद्ध भावना से आरती

धर्म की करो प्रवुद्ध भावना से आरती
वह्नि की प्रचंड ज्योति वैष्णवो पुकारती
समस्त विश्व में करो प्रसार पुष्टि पंथ का
वल्लभीय जाग उठो कह रही है भारती
वाक्पति की वन्दना करो स्वधर्म से सभी
अनेकता में एकता जिसकी वाणी राजती
कर विजय स्वभाव, भेद भावना निकाल दो
महाप्रभु की धवल कीर्ति जगत में प्रकाशती
दान दिया निजानन्द, है अदेय दानी ने
ब्रह्मवादिता मनुज की जीवनी सुधारती.

★ ★ ★

पुष्टि वीथि की मधुर गंध

राग-द्वेष घृणा तजो, मायिक गठबन्ध है,
उठो दिव्य मनुज तव, ब्रह्म से संबंध है ।
तुम हो पर ईश अंश, ध्यान करो निज स्वरूप,
तेरा परिवार सभी, प्रभु से अनुबन्धित है ।
सेवा को रचा जगत, काम सभी हरि के कर,
वल्लभ का यही तत्त्व, जीवन प्रबन्ध है ।
अपनाया तुझे स्वयं, श्री हरि ने आगे बढ़,
पुष्टिपथ वीथि की, यही मधुर गन्ध है ।

जागते सो रहे हैं

देखते चलते हैं
धर्म का आचरण कहीं
दृष्टिगत नहीं होता
सुदूर पर
क्षितिज को देख सकता हूँ
किन्तु सचाई तो
सशक्त दूरबीन से भी
दिखाई देती नहीं
कैसे करूँ कल्पना आदर्श की
सभी से समन्वय की
सभी तो बँट चुके हैं विचार में
शेष जो गये अनाचारों में
भले ही कहते रहो
यह बधिर सेना है
नक्कारखाना तो क्या
बम विस्फोट में भी सोते हैं
कुम्भकर्ण तो जगाने से जाग गया
किन्तु इनको उठाने का
साधन नहीं मिला
क्योंकि जागते सो रहे हैं ।

श्री हरि से ही सब नाते हैं

बिखर रहे क्यों देहधर्म से,
आत्मधर्म से एक बनो तुम
परिजन तेरे प्रभु सेवा को
सेवामय सब कार्य करो तुम
नहीं देह का नाता जग से
श्री हरि से ही सब नाते हैं
सभी चराचर प्रभु शरीर है
उसके हेतु कार्य करो तुम
विषम दृष्टि से मत देखो तुम
यह तो श्री हरि की क्रीड़ा है
लड़ना मरना राग-द्वेष तो
निज मन से पनपी पीड़ा है
आत्म-धर्म से एक ही हो तुम
वल्लभ दर्शित कर्म करो तुम
प्रभु के नाते सब अपने हैं
नहीं पराया और बिराना
स्मरण करो तुम सभी व्रती हो
सेवामय पर कर्म करो तुम

★ ★ ★

जागरण - गीत

जागो जागो पुष्टि पथिक हे !
जागो हे फिर वैष्णवता ।
उठो-उठो जयघोष करो,
मुखरित होगी मानवता ।।
क्यों प्रमाद जीवन में आया,
यह कल्मष क्यों मन पर छाया ।
पावन प्रेम सिखा दो तुम,
भाग जाय जग से दानवता ।।
आहुति की बेला अब आई,
अलसाये क्यों वैष्णव भाई ।
मनुजो बलि दो निज वल्लभ पर,
लाओ फिर से शुद्ध एकता ।।

★ ★ ★

कौन हम, कौन हमारे

शिक्षा, ज्ञान, विवेक को, समझो सोच विचार
अपनी यादी चित धरो, सुमरो बारम्बर ।
सुमरो वारम्वार , कौन हम, कौन हमारे
भव सागर की गंग, पार पड़ो तुम किनारे ।।

★ ★ ★

गुजराती

(व्यंग्य)

प्रभु पासे अपेक्षा

प्रभुजी मने टाणे दर्शन आपोजी,
ज्यारे हुं आवुं व्हाला, उभा तमे रहजो
मनना मनोरथ पूरा तमे करजो
वेइटरनी जेम हरि ! हाजरी पण भरजो,
बंधन धरमना कापोजी
बंधन सहुं तमे कापोजी
प्रभु मने टाणे दरशन आपोजी - ।।१।।
मारी तमे वाटड़ी निसदिन जो जो
आगळ पाछळ प्रभु फरता पण रेहजो
जे पण बतावुं हूँ बधु तमे करजो
टीप तमने सारी अपावुंजी
बुफे हूं तमने करावुंजी
प्रभु तमे टाणे दरशन आपोजी ।।२।।
धर्माचरणमा हूँ नव मानुं
स्वारथ सिवायनु काई नव जाणु
पैसा बिना नव कोई न बखांनु
कीरती मारी बधारो जी
प्रभु मने टाणे दरशन आपोजी ।।३।।
मन मान्यु मारूं आचार हूँ करतो
आम-तेम लालसामा गमे त्यां फरतो
भूखड़ी लागे त्यारे पेट हूँ भरतो
इन्द्रिय निग्रहमां नव मानुंजी
प्रभु मने टाणे दरशन आपोजी ।।४।।
स्वारथनी प्रीतड़ी मारी स्वीकारजो जी
अप-टु-डेट थई बारना उघाडजो
वेणुना स्थाने पोप म्युझिक वघाडजो
प्रभु मने टाणे दरशन आपोजी ।।५।।
एंजिन नी माफक सिगारेट हूं फुंकतो
मारा बीजाना हैया हूं बालतो
ड्रिंकिग करीने वाला दम हूं मारतो
गंगा गटरनो भेद नइ मानतो
साईन्टिफीक तमने सिखड़ावुजी
प्रभु मने टाणे दरशन आपोजी ।।६।

श्याम को संदेशों लैके पावस ऋतु आई है

कुंज कंजदलन पै बूंदन के मोती बिछे,
झलकत द्युति दामिनी की सोभा सरसाई है ।।
उमड़ घुमड़ आये दल बादल के साज सजे,
इन्द्र के धनुष की चूनर चटकाई है ।।
फूल्यो फूल्यो फिरत समीर मानो भौंरा सो,
श्याम को संदेसो लैके पावस ऋतु आई है ।।
हुलसि भादों के नीर कुसुम फुही बरखावत,
राधे गुपालजु की करन अगुवाई है ।।

★ ★ ★

भक्ति तत्त्व

भक्ति तो है रस प्रचुर को शृंखला बाँधने की,
भक्ति से बनता खिलौना सृष्टि - सृष्ठ मुरारि,
गोपिका के ललित गृह में तक्रदुग्धादि हेतु,
नाचा वो तो, परम प्रिय है भक्ति श्री हरि को ।।१।।
वर्षों से जो सघन वन में उग्र धूनी रमाते,
वायु खा के तप बहु करें योगी अरू तपस्वी,
तो भी उनको ब्रजपति की पुण्य झांकी न होती,
इच्छा पूरी ध्रुव ह्रदय की अल्प क्षण में अहा हा ।।२।।
होता हूं मैं भक्ति से वश गूढ़वाणी विभु की,
शास्त्रों में भी प्रभुचरण का प्राप्ति उल्लेख इससे,
भक्ति तो है प्रणय प्रतिमा औ, सुसेवा प्रभु की,
भक्ति तो है शुचि सुमधुरा, मित्र ! आनंद रूपा ।।३।।
मलिन मन से बंध काटे शुद्ध निर्दोष भक्ति,
भक्ति दे निर्मोल साथी दिव्य ऐश्वर्य कान्ति,
भक्तों की है जीवनी धन, प्राण सर्वस्व भक्ति,
विश्व में ना अन्य कुछ प्रिय तत्व है 'प्रेम भक्ति' ।।४।।

गो. श्री ब्रजनाथलाल जी महाराज , बोरीवली

★ ★ ★